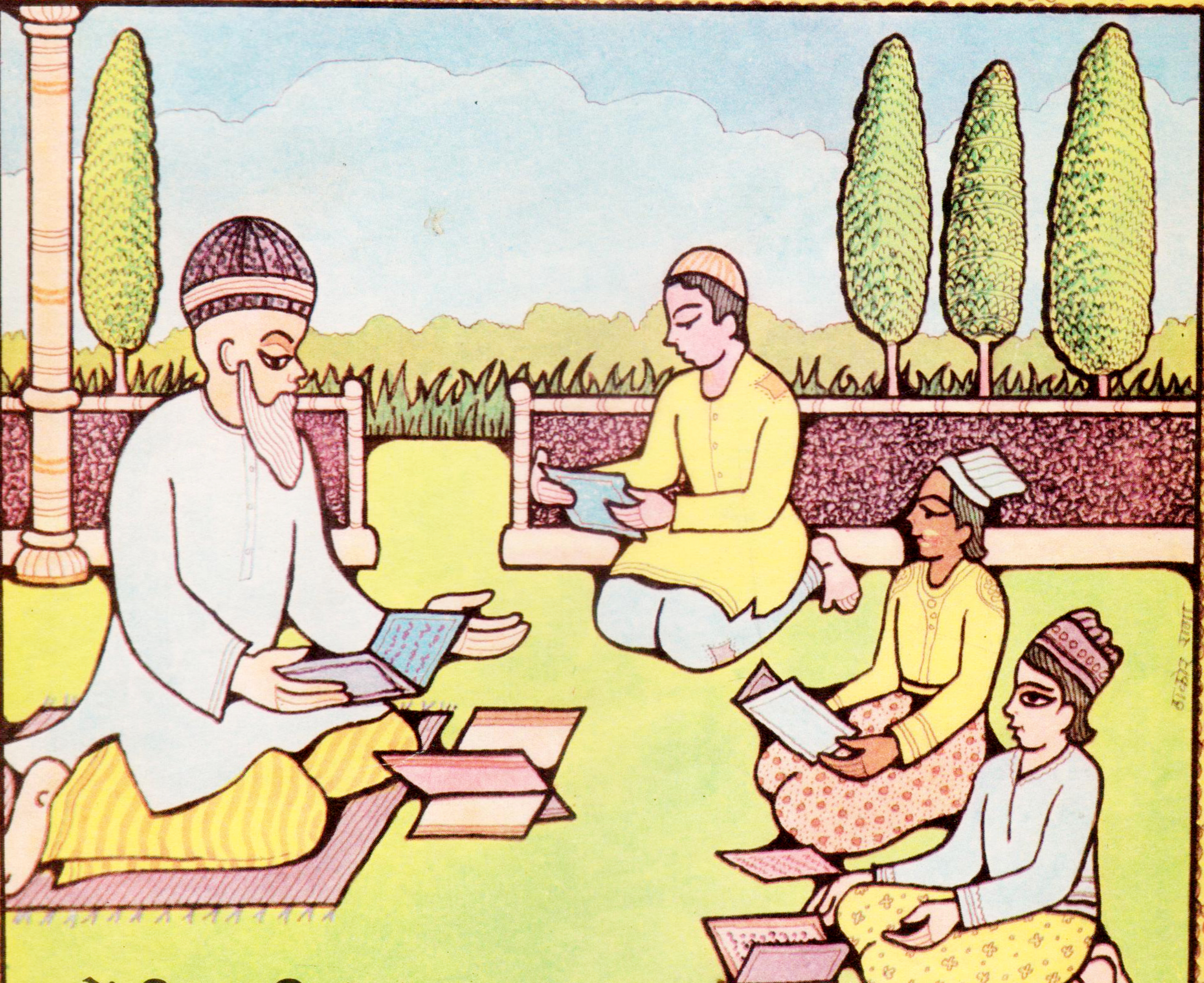
हजरत उमर की कहानी

आले रसूल



बच्चों की कहानियां

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा बम्बई

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगड़ों, जलन और बैर की वजह से हम कमजोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये जमाने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमजोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हकीकत है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुकाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर जोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैगम्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज्जत की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफसोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमजोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की जरूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना जरूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और जिन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बड़े-बड़े संत–पैगम्बरों की जिन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुड़ी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

हजरत उमर की कहानी

आले रसूल

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

संपादक :

मूलशंकर भट्ट

चित्रकार :

ठाकोर राणा

प्रकाशक :

वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई–४०० ००२

मुद्रक :

अकील दीवानजी
ऑनलुकर प्रेस
१६, सासुन डाक
कोलाबा, बम्बई–४०० ००५

मूल्य :

दो रुपये

हजरत उमर की कहानी

अरब देश के मक्का शहर से कोई दस मील की दूरी पर एक बड़ा-सा मैदान था। मैदान में बहुत सारे ऊंट इधर-उधर चर रहे थे।

एक तरफ एक तेरह-चौदह वर्ष का लड़का खजूर के पेड़ से टेक लगाये बैठा था। दिन भर ऊंट चराते-चराते वह थक गया था। अचानक ही उस लड़के का बाप खत्ताब वहां आ पहुंचा। लड़के को पेड़ से टिककर आराम करते देख वह भड़क उठा। उसने आव न देखा ताव और बेटे को पीटना शुरू कर दिया।

जिस लड़के की उस रोज पिटाई हुई थी, जानते हो वह कौन था? उसके पिता को भी क्या मालूम था कि आज जिसके हाथों में उसने ऊंट की रस्सी थमा दी है, कल उसी के हाथ में समूचे मुस्लिम जगत की बागडोर आ जायेगी?

उस लड़के का नाम था उमर।

उमर जब जवान हुए तो उन्होंने अरब के दूसरे बच्चों की तरह तलवार-भाला चलाना, कुश्ती लड़ना और भाषण देना सीखा।

जिस समय पैगम्बर हजरत मुहम्मद ने इस्लाम धर्म का प्रचार शुरू किया, उस समय कुरैश समुदाय में केवल १७ आदमी पढ़ना-लिखना जानते थे। उनमें एक उमर भी थे। उमर ने व्यापार के लिए दूर-दूर देशों का सफर किया और वहां बहुत कुछ सीखा।

उनके दिल में ज्ञान पाने की तड़प थी। बहुत जल्दी वे इतनी सूझ-बूझ वाले बन गये कि कुरैश समुदाय पर जब भी कोई धार्मिक, सामाजिक या आर्थिक समस्या आ पड़ती तो लोग उमर को ही अपना दूत बनाकर भेजते थे। तब उमर की आयु सत्ताइस वर्ष की थी जब वे हजरत मुहम्मद के साथियों में शामिल हो गये। हजरत मुहम्मद के ऊंचे आदर्शों के प्रचार के लिए उन्होंने खुद को सर्मपित कर दिया।

सन ६३४ ईस्वी में हजरत उमर खलीफा की गद्दी पर बैठे। वे इस्लाम के दूसरे खलीफा थे। आपने साढ़े दस वर्ष तक खुदा और उसके पैगम्बर के बताये आदर्शों से जनता को परिचित कराया।

हजरत उमर पहले व्यक्ति थे जिन्होंने खलीफा के रूप में सरकारी खजाना स्थापित किया, अदालतें खोलीं और काजी नियुक्त किए। उनके शासन काल ही में इस्लामी वर्ष अर्थात हिज्री सन लिखने का रिवाज शुरू हुआ। उन्होंने स्वयंसेवकों को वेतन देना शुरू किया। जनगणना की शुरुआत की। नहरें खुदवायीं। जेलें बनवायीं। कोड़े की सजा शुरू की। पुलिस विभाग स्थापित किया और जन-कल्याण के अनेक काम किए।

हजरत उमर खलीफा थे और खलीफा बादशाह की तरह होता था। लेकिन हजरत उमर ऊपरी दिखावे से दूर थे। मस्जिद का फर्श उनका सिंहासन था और उनके जितने साथी थे वे सब उनके वजीर थे।

हजरत उमर खलीफा होते हुए भी कोई निर्णय अकेले नहीं लेते थे। उनके कपड़े अकसर फटे होते थे। जमीन ही उनका बिछौना थी। कन्धे पर मशक लादे वे गरीबों के घर-घर जाकर उनका पानी भरते थे। उनके दरबार में अमीर-गरीब का कोई भेद नहीं था।

हज के दिनों की एक घटना है।

मक्का की बड़ी मस्जिद में बने काबे

के चारों बगल चक्कर लगाते वक्त एक गरीब अरब का पांव, एक अमीर अरब की चादर पर पड़ गया। अमीर अरब ने उसे एक चांटा मार दिया।

गरीब अरब अपनी शिकायत लेकर हजरत उमर के पास पहुंचा। उन्होंने सिपाही भेजकर उस अमीर अरब को बुलवाया।

अमीर आदमी से उन्होंने पूछा, "क्या तुमने इस आदमी को चांटा मारा है ?"

अमीर अरब को यह भ्रम था कि मेरी धन-दौलत देखकर खलीफा मेरे हित में ही फैसला करेंगे। वह शान से बोला, "हां, मारा है। भला इस नीच आदमी की इतनी मजाल कि मेरी कीमती चादर को पैरों तले मसल दे !"

हजरत उमर ने फैसला सुनाया।

उन्होंने गरीब अरब से कहा, "आगे बढ़ो, और जितनी जोर से इसने तुम्हें चांटा मारा था, उतनी ही जोर से तुम भी इसको मारो।"

खलीफा के आदेश का पालन गरीब अरब को करना ही पड़ा।

चांटा खाकर अमीर अरब गुस्से में वहां से चला आया, और अपने सेवक के हाथ एक चिठ्ठी उसने हजरत को भेजी जिसमें लिखा था, "जिस धर्म में ऊंच-नीच का कोई अन्तर न समझा जाये, ऐसे धर्म को मैं छोड़ रहा हूं।"

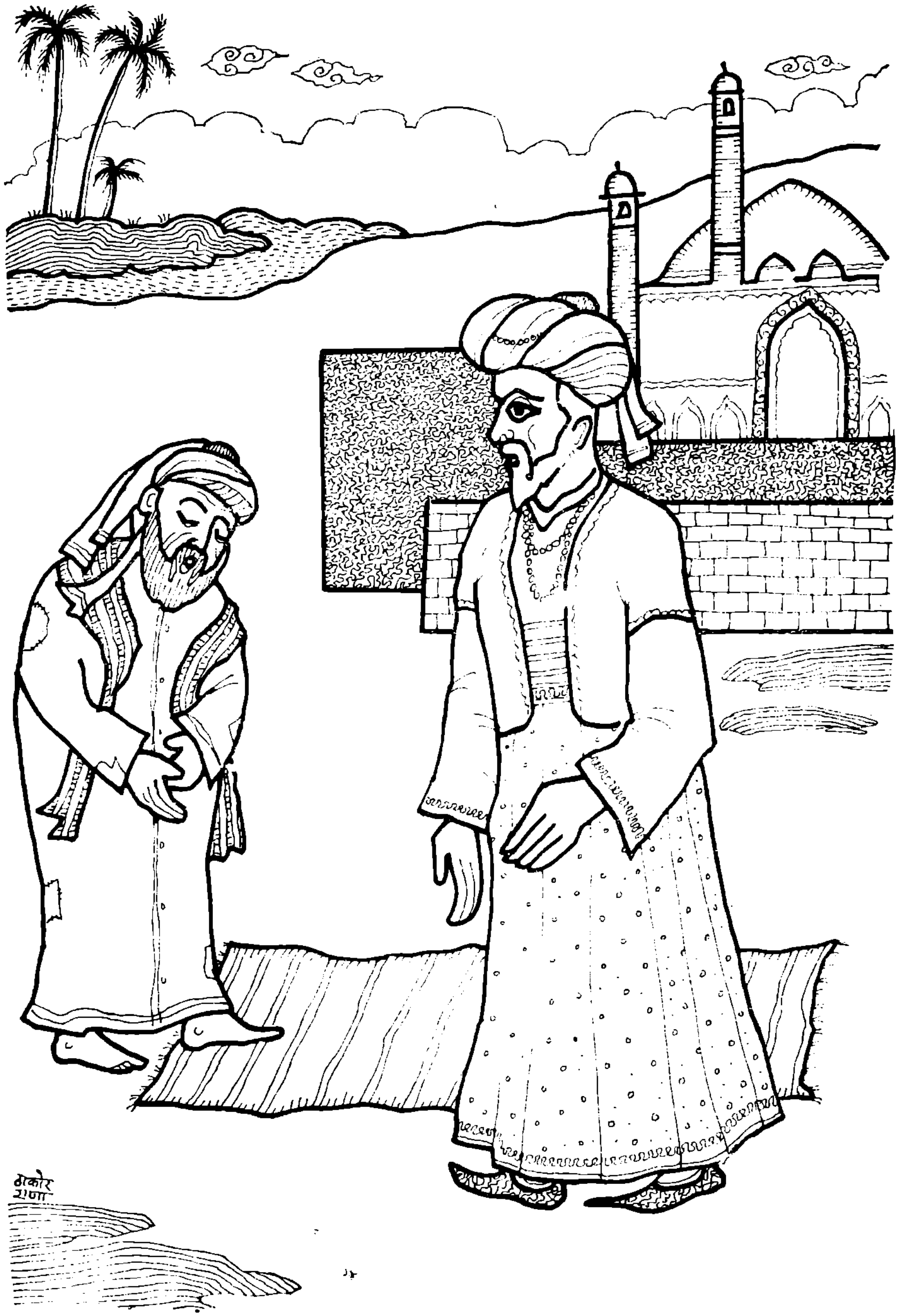
पत्र पढ़कर हजरत उमर बोले, "अल्लाह का शुक्र है कि उसने मेरे धर्म को एक क्रूर और घमण्डी आदमी से बचा लिया।"

एक बार एक आदमी ने अदालत में हजरत उमर के खिलाफ एक मुकदमा पेश किया।

उसका कहना था, "मेरी गैर-हाजिरी में उमर ने मेरे घर का परनाला उखड़वा दिया।"

काजी ने खलीफा हजरत उमर को आम आदमी की तरह अदालत में हाजिर होने का आदेश दिया।

काजी ने हजरत उमर से पूछा, "क्या यह सच है कि तुमने इस आदमी का परनाला उखड़वा दिया है ?"



" एक गरीब अरब का पांव, एक अमीर अरब की चादर पर पड़ गया

उमर ने जवाब दिया, "जी हां, सच है। उस परनाले का पानी मस्जिद में गिरता था जिससे लोगों को आने-जाने और नमाज पढ़ने में कठिनाई होती थी। इसलिए मैंने उसे निकलवा दिया।"

इस पर विरोधी आदमी ने कहा, "वह परनाला मैंने पैगंबर हजरत मुहम्मद की आज्ञा से लगवाया था।"

काजी ने आदेश दिया कि वह परनाला फिर से लगाया जाये।

उस आदमी ने फिर कहा, "सरकार, जिस समय मैं वह परनाला लगवा रहा था, उस समय मेरे पास सहायता के लिए कोई आदमी नहीं था। सीढ़ी भी नहीं थी। मैंने जब अपनी दिक्कत पैगम्बर हजरत मुहम्मद को बतायी तो उन्होंने मुझे यह आदेश दिया था कि मैं उनके कन्धों पर खड़े होकर परनाला लगाऊं। अब मैं वैसे कन्धे कहां से लाऊं?"

हजरत उमर यह सुनकर रो पड़े और बोले, "मेरे भाई, मुझे माफ कर दो। मुझे पता नहीं था कि वह परनाला पैगंबर की मर्जी से लगा है। अब तुम मेरे कन्धे पर खड़े होकर अपना काम पूरा करो।"

लोगों ने देखा कि वह आदमी खलीफा के कन्धों पर सवार होकर अपना परनाला लगा रहा है।

हजरत उमर के दिल में हर घड़ी भगवान का डर रहता था। दुनिया की माया से उन्हें कोई लगाव नहीं था।

एक दिन उन्होंने अपने बेटे को रोते देखकर पूछा, "बेटे, रो क्यों रहे हो?"

बेटे ने उत्तर दिया, "मदरसे के लड़कों ने मेरी कमीज के पैबन्द गिने और मेरी हंसी उड़ायी कि लो देखो, यह ऐसे खलीफा का बेटा है जिसके पास पहनने के लिए ढंग के कपड़े भी नहीं हैं।"

उस समय हजरत उमर जो कमीज पहने थे उसमें चौदह पैबन्द थे। उन्होंने अपने खजांची से कहलवाया, "हमें खजाने से कुछ रकम दे दो। अगले महीने हमारे वेतन में से काट लेना।"

खजांची ने जवाब दिया, "अगर आपको महीने भर अपने जीवन का पूरा-



" काजी ने आदेश दिया कि वह परनाला फिर से लगाया जाए।"

पूरा भरोसा हो, तो मैं यह रकम भेज सकता हूं। यदि आप इसी बीच मर गये और खजाने का पैसा आप पर रह गया तो क्या कीजियेगा ?"

हजरत उमर की आंखों में आंसू आ गये।

बेटे से बोले, "बेटे, तुम्हें ऐसे ही मदरसा जाना होगा। मुझे अपने जीवन के बारे में घड़ी भर का भी भरोसा नहीं है।"

हजरत उमर जब सीरिया की ओर गये थे तो आधे रास्ते खुद ऊंट पर सवार होते और आधे रास्ते अपने सेवक को बिठाते। जब सीरिया के पास पहुंचे तो सेवक के सवार होने की बारी थी। रास्ते में पानी आ गया। हजरत उमर ने अपने जूते बगल में दबा लिए और पानी में कदम रख दिए।

इतने में सीरिया का हाकिम वहां आ गया। अपने खलीफा की दशा देखकर उसने कहा, " सरकार, सीरिया के बड़े-बड़े लोग आपके स्वागत के लिए आने वाले हैं। यह ठीक नहीं होगा कि वे आपको ऐसी हालत में देखें।"

हजरत उमर ने जवाब दिया, "और मुझे यह ठीक नहीं लगता कि मैं अपनी शान रखने के लिए सेवक के अधिकार छीन लूं।"

हजरत उमर उसी हालत में सीरिया की सीमा में दाखिल हुए।

खलीफा बनने के बाद हजरत उमर की यह आदत थी कि वे रात को अपनी प्रजा का हाल देखने के लिए गलियों में घूमते थे।

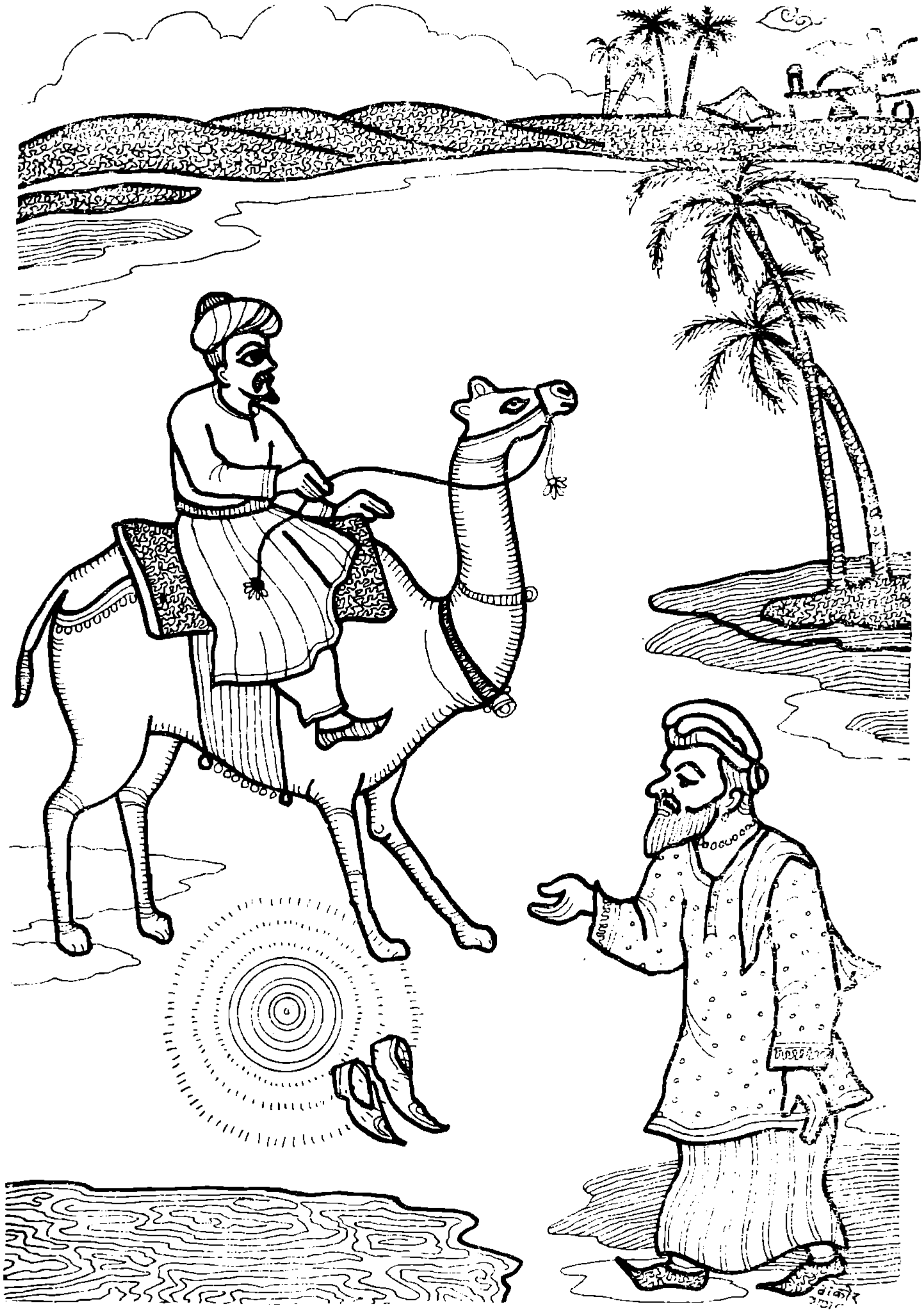
एक रात जब वे एक गली से गुजर रहे थे तो उन्हें रोने की आवाज सुनायी दी।

वे वहीं रुक गये।

एक औरत अपने बच्चों से कह रही थी, "मेरे और उमर के बीच ईश्वर ही फैसला करेगा।"

हजरत उमर द्वार खुलवाकर अन्दर आये और बोले, " उमर ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?"

उस औरत ने उन्हें पहचाना नहीं। बोली, "उमर ने मेरे पति को धर्मयुद्ध



" मुझे यह उचित नहीं लगता कि मैं अपनी शान के लिए सेवक के अधिकार छीन लूं।"

पर भेज दिया है। यहां छोटे-छोटे बच्चे खाने-पीने के लिए तड़प रहे हैं।"

हजरत उमर तुरन्त बाजार गये और आंटे की गठरी और दूसरी वस्तुएं खरीदकर, अपनी पीठ पर लादकर औरत के घर की तरफ चल पड़े।

उनके सेवक ने कहा कि लाइए, मैं ले चलूं। लेकिन हजरत उमर ने उसे यह कहकर रोक दिया कि संसार में तो तुम मेरा बोझ उठा सकते हो। मगर परलोक में मेरे गुनाहों का बोझ कौन उठायेगा ?

हजरत उमर उस औरत के घर पहुंचे। चूल्हा जलाया, अपने हाथों से आंटा गूंधा, खाना पकाया और बच्चों को जगाकर अपने हाथों से खिलाया। फिर उनसे माफी मांगते हुए कहा, "ईश्वर के दरबार में उमर को माफ कर देना।"

हजरत उमर बड़े दिलवाले आदमी थे। गरीबों का बड़ा ख्याल रखते थे। कई बार ऐसा होता कि पैगम्बर हजरत मुहम्मद उन्हें कोई तोहफा देते तो वे यह कहकर पीछे हट जाते, "सरकार, यह तोहफा उसको दे दीजिए जो मुझसे अधिक गरीब हो।"

हजरत उमर अपने घर के नौकरों के साथ भी भाइयों-सा बर्ताव करते थे।

एक बार उनके एक साथी ने एक बड़े प्याले में खाना लाकर उनके सामने रख दिया। हजरत उमर ने भिखारियों और सेवकों को बुलवाया और सबको अपने साथ बिठाकर खाना खिलाया। इसके बाद कहा, "अल्लाह ऐसे लोगों को पसन्द नहीं करता जो सेवकों के साथ खाना खाने और उठने-बैठने में अपमान समझते हैं।"

हजरत उमर हर हालत में ईमानदारी को महत्व देते थे। सीरिया को जीतने के बाद हजरत उमर और रूम के कैसर की दोस्ती हो गयी थी। उनके बीच पत्र-व्यवहार भी रहता था।

एक बार हजरत उमर की पत्नी ने रूम के कैसर की पत्नी के पास तोहफे के रूप में इत्र की कुछ शीशियां भिजवायीं। रूम की रानी ने उत्तर में उन शीशियों को जवाहरात से भरकर वापस भेजा।

हजरत उमर को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने कहा, "यह ठीक है कि इत्र तुम्हारा था, मगर जिस आदमी के हाथ वे शीशियां भिजवायी थीं तुमने, वह सरकारी



" जवाहरात पर तुम्हारा नहीं, सरकार का अधिकार है।"

आदमी था। उसका खर्च सरकारी खजाने को उठाना पड़ा था। इसलिए जवाहरात पर तुम्हारा नहीं, सरकार का अधिकार है।"

हजरत उमर ने वे सारे जवाहरात सार्वजनिक खजाने में जमा करवा दिए।

एक बार हजरत उमर बीमार पड़े। हकीमों ने शहद की दवा बतायी। सरकारी खजाने में शहद मौजूद था मगर बिना आज्ञा हजरत उमर उसे प्रयोग में नहीं ला सकते थे। आप मस्जिद में गये और लोगों से पूछा, "यदि आप आज्ञा दें तो सरकारी खजाने से थोड़ा सा शहद ले लूं।"

लोगों ने कहा, "आप खलीफा हैं। खजाना आपने अधिकार में है।"

हजरत उमर ने कहा, "मैं खलीफा तो जरूर हूं पर खजाना जनता की अमानत है। उसे सम्हालने का काम जनता ने मुझे सौंप रखा है।"

हजरत उमर को सरकारी खजाने से एक निश्चित रकम मिलती थी जिससे वे अपने घर का खर्च चलाते थे। उनके घर में महीनों गेहूं की रोटी नहीं पकती थी। वे इस्लामी जगत के बादशाह थे, फिर भी छोटे-छोटे काम खुद किया करते थे।

दैनिक वेतन पर जो लोग रखे जाते थे उनका वेतन वे खुद बांटने जाते थे। अकसर ऐसा होता था कि वे दान केन्द्र में जाते और दान के पशुओं के पास खड़े होकर उनका पूरा विवरण खुद रजिस्टर में लिखते।

युद्ध के लिए गये सिपाहियों के घर जाते और पूछते, "बाजार से कुछ मंगवाना है? लाओ, मैं ला दूं।" फिर खुद बाजार जाते और सबका सौदा खरीदकर घर-घर पहुंचाते। सिपाहियों के पास से आये पत्र उनके घरवालों तक वे खुद ले जाते। यदि कोई उत्तर लिखवाना चाहता तो वहीं जमीन पर बैठकर उसका पत्र लिख देते।

हजरत धर्म के मामले में बड़े सख्त थे लेकिन उन्होंने कभी दूसरे धर्मवालों पर अत्याचार नहीं किया।

उनका एक गुलाम ईसाई था। उन्होंने दो-एक बार उससे कहा कि वह इस्लाम धर्म कबूल कर ले लेकिन वह नहीं माना।

हजरत उमर ने उससे कहा, "आज के बाद मैं कभी तुझसे धर्म की बात नहीं करूंगा क्योंकि मेरे खुदा का आदेश है कि धर्म के मामले में किसी पर जोर-जबर-दस्ती मत करो।"

इन विशेषताओं ने हजरत उमर को अमर बना दिया। ●

दाढ़ी का चमत्कार

आधी रात को बादशाह मुहम्मद घूमने निकले। रास्ते में उन्हें चोरों की एक टोली मिली। चोरों में से किसी आदमी ने पूछा, "भले आदमी, तुम कौन हो ?"

"मैं आप लोगों में से ही एक हूं," बादशाह ने कहा।

एक चोर ने कहा, "मेरे फनकार दोस्तो, आज हम सब अपनी-अपनी खासियत बतलाएं।"

एक चोर बोल उठा, "मुझे अपने कानों पर घमंड है। कहीं कोई कुत्ता भी भौंके तो मैं समझ लेता हूं कि वह क्या बोलता है।"

दूसरे ने कहा, "मेरी खासियत तो मेरी नजरों में है। मैं अंधेरी रात में भी कहीं, किसी को एक बार देख लेता हूं तो उसे कहीं भी, कभी भी पहचान सकता हूं।"

"और मेरी विशेषता," तीसरा बोल उठा, "मेरी विशेषता मेरी इन बाहों में समायी है। कितनी भी मजबूत दीवाल हो, मैं उसमें अपनी बाहों की ताकत से सेंध बना सकता हूं।"

चौथा बोला, "मेरी यह नाक ही सबकुछ है। मैं जमीन को सूंघकर बता सकता हूं कि किस जगह खजाना छिपा है।"

"और मेरी किस्मत तो मेरी इन मुट्ठियों में बंद है। कहो तो पहाड़ की

चोटी पर भी फंदा फेंककर उसे बांध दूं।"

"और यार, तुम्हारा फन तुम्हारे किस जिस्म में छिपा है?", उनमें से किसी ने बादशाह से पूछा।

उन्होंने जवाब दिया, "मेरी विशेषता तो भाई मेरी इस दाढ़ी में है!"

"वह कैसे ?" सबने हैरत के साथ पूछा।

"मैं अपनी दाढ़ी हिलाकर बड़े-से-बड़े गुनाहगार को सजा से बचा सकता हूं।"

"तब तो तुम हमारे मुखिया बन जाओ" सब चोरों ने चिल्लाते हुए कहा, "तुम हमें मुसीबतों से बचा सकते हो!"

चोरों की टोली रात की चोरी की तैयारी में लग गयी कि कहीं दूर, एक कुत्ता भौंका।

"वह कुत्ता कहता है कि सुलतान तुम्हारे साथ है," कुत्ते की बोली समझने वाला चोर बोला।

किसी को इसका मतलब समझ में न आया। वे सब अपने काम में लग गये। एक चोर ने जमीन सूंघकर बताया कि यहां किसी रईस का खजाना गड़ा हुआ है। फंदेबाज ने उस मकान की अटारी पर फंदा फेंका और सारे चोर उस ऊंची दीवाल को आसानी से लांघ गये।

हाथों से सेंध बनानेवाले ने देखते-देखते सुरंग बनाकर छिपे खजानें तक पहुंचनें का रास्ता तैयार कर दिया। सबने जितना भी हो सकता था, माल भर लिया और बाहर निकल आये। नियत जगह पर पहुंचकर माल जमीन में गाड़ा और चैन की सांस ली।

दूसरे दिन सुबह अजब तमाशा हुआ। सारा माल राजा के सिपाहियों नें निकाल लिया, और चोरों को पकड़कर दरबार में लाया गया। चोर कांप रहे थे।

रात के अंधेरे में देखे हुए इंसान को भी पहचान लेनेवाले चोर नें दरबार में पहुंचते ही सुलतान को पहचान लिया। अपने साथियों से धीरे से बोला, "अरे, ये तो वे ही जनाब हैं जो रातभर हमारे साथी बनकर हमारे साथ रहे थे।" तब उनको याद आया कि कुत्ते नें भी कहा था कि सुलतान तुम्हारे साथ हैं। फिर उन सबको याद आया कि इन जनाब

ने कहा था कि उनकी दाढ़ी हिलानें भर सें ही किसी की जान बच सकती है।

बेंड़ियों में बंधा हाथ जोड़कर उनमें से एक नें कहा, "बादशाह सलामत! रातभर की दोस्ती के नाते हम पर तरस खाइए। हमारे गुनाहों को माफ कीजिए।"

दूसरे नें कहा, "अल्लाह मियां आपको और आपकी दाढ़ी को सलामत रखें।"

बादशाह मुस्करा उठें। उन्होंनें मन में सोचा कि इनके हुनर का इस्तेमाल किसी अच्छें काम के लिए क्यों न किया जायें। बादशाह ने कहा, "देखो, तुम लोगों ने बहुत बड़ी चोरी की है। तुम्हारा यह गुनाह बहुत भारी है। तुम्हें तो फांसी पर ही लटकाना चाहिए...."

बीच में ही चोर बोल उठे, "रहम खाइए सरकार, रहम खाइए।"

बादशाह बोले, "सुनो, दोस्ती निभाना भी हमारा फर्ज है। इसलिए तुम लोगों पर तरस भी आता है। एक शर्त पर मैं तुम्हें माफ कर सकता हूं। वादा करो कि आइंदा कभी चोरी या वैसा बुरा काम कभी नहीं करोगे।"

"सरकार, हम कसम खाकर कहते हैं कि हम कभी चोरी नही करेंगे" चोरों ने कहा।

सुलतान मुहम्मद ने सबकी जान बक्श दी। इतना ही नहीं, उन सबको उनकी विशेषताओं के मुताबिक काम भी सौंपा गया ताकि फिर कभी चोरी करने की उनकी इच्छा न हो।

जिसके कान चौकन्ने थे, उसे राज्य की खुफिया पुलिस में रखा गया।

जिसकी आंखें तेज थीं उसे महल का पहरेदार बनाया गया।

सूंघकर जमीन परखनेवाले चोर को खेती-बाड़ी का कारोबार संभालने का हुक्म मिला।

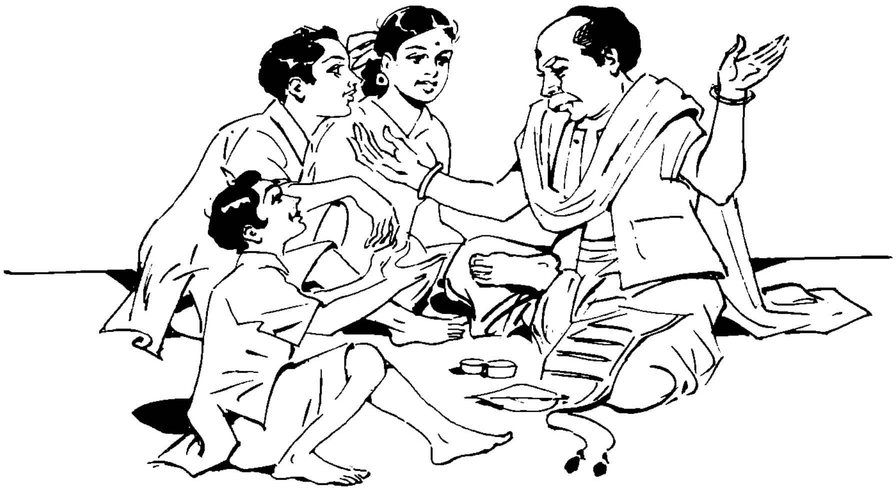
जिसकी बाहों में ताकत थी उसे, और जो फंदा फेंकने में निपुण था उसे, सेना में भरती कर लिया गया।

इस तरह नागरिकों को चोरों से और चोरों को चोरी से छुटकारा मिला। ●

["मसनवी" से]

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना १९३८ में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी !

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी **पांचवीं** किश्त है। इस सेट के हर किताब की कीमत दो रुपये होगी।



हमारे आगामी प्रकाशन

- राजा महाजनक
- संत जलाराम
- कंजूस इल्लीस
- कूरगडु मुनि
- कण देवता
- बक राक्षस का वध
- हनुमान
- स्वामी विवेकानंद
- सुनहरा नेवला
- भाई हो तो भरत जैसा





बच्चों की कहानियां

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई–४००००२





